हिन्दी साप्ताहिक

PRGI No:- UAHIN/26/A3063

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-06 ♦नैनीताल - शुक्रवार 26 जून 2026 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/

भारतीय सेनाओं के त्रिशूल अभ्यास से घबराया पाकिस्तान, सेना को अलर्ट पर रहने को कहा

नईदिल्ली। भारत की तीनों सेनाएं सीमा के पास संयुक्त सैन्य अभ्यास त्रिशूल करने जा रही हैं। इसके लिए 30 अक्टूबर से 10 नवंबर तक नोटेम (नोटिस टू एयरमैन) जारी किया है। यानी अभ्यास क्षेत्र की वायुसीमा में 12 दिन तक प्रवेश पर पाबंदियां रहेंगी। इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य भारत की तीनों सेनाओं की संयुक्त क्षमता, आत्मनिर्भरता और नवाचार का प्रदर्शन करना है। इस अभ्यास से पाकिस्तान घबरा गया है और उसने हाई अलर्ट जारी किया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, अभ्यास से पहले पाकिस्तान ने कई कमांडों और ठिकानों को हाई अलर्ट पर रखा है। रिपोर्ट में शीर्ष पाकिस्तानी सुरक्षा सूत्र के हवाले से कहा गया है कि पाकिस्तान ने सिंध और दक्षिणी पंजाब में दक्षिणी कमानों के लिए हाई अलर्ट जारी किया है और किसी भी संभावित आक्रमण का जवाब देने के लिए तैयार रहने को कहा है। खासतौर पर बहावलपुर स्ट्राइक कोर और कराची (सिंध) कोर को तैयार रहने के लिए कहा गया है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान ने शोरकोट, बहावलपुर, रहीम यार खान, जैकोबाबाद, भोलारी और कराची जैसे वायुसैनिक अड्डों को तैयार रहने को कहा है। इसके अलावा अरब सागर में गश्त और अभियान बढ़ाने के लिए नौसेना को भी निर्देश दिए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान को डर है कि इस अभ्यास का इस्तेमाल कराची से जुड़े समुद्री अवरोध क बिंदुओं और तटीय बुनियादी ढांचे को खतरे में डालने की क्षमता प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है। तीनों सेनाओं का यह संयुक्त अभ्यास गुजरात-राजस्थान की सीमा पर सर क्रीक से लेकर जैसलमेर तक 30 अक्टूबर से 10 नवंबर तक चलेगा। रिपोर्ट के अनुसार, अभ्यास के लिए चुना गया क्षेत्र इस बार काफी बड़ा और असामान्य है। इस सैन्य अभ्यास के दौरान 28,000 फीट तक का एयरस्पेस सुरक्षित रखा जाएगा। यानी इस ऊंचाई तक कोई सामान्य विमान उड़ान नहीं भर सकेगा। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, अभ्यास में दक्षिणी कमान के सैनिक चुनौतीपूर्ण इलाकों में अभियानों का प्रदर्शन करेंगे।

रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, यह अभ्यास तीनों सेनाओं की संयुक्त ऑपरेशनल क्षमता, आत्मनिर्भरता और इनोवेशन को प्रदर्शित करने का हिस्सा है।

उत्तरांचल ग्रामीण बैंक के प्रतिनिधियों ने की सीएम धामी से भेंट

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शनिवार को मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय में उत्तरांचल ग्रामीण बैंक के प्रतिनिधियों ने भेंट की। इस दौरान बैंक प्रतिनिधियों ने उत्तराखंड में आपदा प्रभावितों की सहायता एवं पुनर्निर्माण कार्यों के लिए 35,49,371 की धनराशि मुख्यमंत्री राहत कोष में प्रदान की। मुख्यमंत्री ने इस सहयोग के लिए बैंक प्रबंधन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह योगदान आपदा प्रभावितों की सहायता एवं पुनर्निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा समाज के सभी वर्गों द्वारा किया गया सहयोग अत्यंत सराहनीय है और इससे पीड़ितों को राहत प्रदान करने में भी सहायता मिलेगी। इस अवसर पर बैंक के चेयरमैन हरिहर पटनायक, राजीव प्रकाश, सुश्री भारती नौडियाल , हरीश कण्डारी, महिपाल डसीला मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने प्रदान की विभिन्न विकास योजनाओं के लिए 163.52 करोड़ की वित्तीय स्वीकृति

देहरादून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने जनपद टिहरी गढ़वाल के धनोल्टी विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत लालूरी घियाकोटी क्यार्दा की चली मोटर मार्ग का पुनर्निर्माण एवं सुधारीकरण कार्य हेतु रु 4.16 करोड़ के साथ रणकौची मन्दिर, चम्पावत हेतु उत्तराखण्ड परियोजना विकास एवं निर्माण निगम लि० द्वारा आगणित धनराशि के सापेक्ष 4.57 करोड़ धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया है।

मुख्यमंत्री द्वारा पुलिस लाईन रेसकोर्स देहरादून में पेयजल योजना (नई पाईप लाईन एवं ओवर हेड टैंक) के निर्माण कार्य हेतु 05 करोड़, पुलिस लाईन रेसकोर्स देहरादून में टाईप द्वितीय (ब्लॉक-सी) के 120 आवासों के निर्माण हेतु 51 करोड़ तथा लोक सेवा आयोग के भगीरथ आवासीय परिसर में एक बहुमंजलीय इमारत जिसमें टाईप-3 के 20 आवास एवं टाईप-4 के 20 आवास बनाये जाने हेतु 19 करोड, आई०आर०बी० द्वितीय वाहिनी, देहरादून परिसर में टाईप द्वितीय के 120 आवासों के निर्माण हेतु 54 करोड़ के साथ ही राज्य योजना के अर्न्तगत राजभवन, देहरादून में बहुउद्देशीय भवनों का निर्माण कार्य (विद्युतीकरण सहित) कुल 13.73 करोड़ की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा राज्य योजना के अर्न्तगत रूद्रप्रयाग के विधानसभा क्षेत्र केदारनाथ में श्री केदारनाथ धाम पैदल यात्रा मार्ग में श्री केदारनाथ जी से गरूरचट्टी पैदल मार्ग की छतिग्रस्त दीवारों का पुर्ननिर्माण एवं रैलिंग फिक्सिंग, मलवा सफाई कार्य हेतु 5.22 करोड़, राज्य योजना के अन्तर्गत जनपद पौड़ी गढ़वाल के विधानसभा क्षेत्र चौबटटाखाल के विकासखण्ड पोखड़ा में दमदेवल-गडरी मोटर मार्ग का झलपाड़ी तक पुनर्निर्माण एवं सुधारीकरण का कार्य हेतु 3.39 करोड़ एवं मुख्यमंत्री घोषणा के तहत जनपद पौडी के विधानसभा क्षेत्र चौबटटाखाल के विकासखण्ड पोखड़ा के अर्न्तगत चलकुड़िया-मसमोली-सकलोनी-नौखोली मोटर मार्ग किमी0 9 से 12 में पुनर्निर्माण एवं सुधारीकरण कार्य हेतु 3.45 करोड की धनराशि स्वीकृत किये जाने का अनुमोदन प्रदान किया गया है।

आयुर्वेद विवि में प्रशासकीय व वित्तीय अनियमितता, वित्त विभाग ने तलब की कार्रवाई की रिपोर्ट

देहरादून। उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय में प्रशासकीय व वित्तीय अनियमितताओं पर वित्त विभाग ने कार्रवाई की रिपोर्ट तलब की है। इस संबंध में वित्त विभाग ने सचिव आयुष को पत्र जारी कर एक सप्ताह में जवाब देने को कहा है।आयुर्वेद विवि में कर्मचारियों के नियम विरूद्ध पदोन्नति व अन्य वित्तीय अनियमितताओं को गंभीरता से लेते हुए वित्त विभाग ने विश्वविद्यालय को दी जाने वाली राशि रोक थी। वित्तीय वर्ष 2023-24 में वित्त विभाग ने दोषी अधिकारियों व कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने व नियम विरुद्ध दिए गए वित्तीय लाभ की वसूली करने की शर्त पर विवि को 125 करोड़ की राशि जारी थी। धनराशि मिलने के बाद विवि ने कार्रवाई की रिपोर्ट शासन को नहीं दी। अपर सचिव वित्त डॉ. अहमद इकबाल की ओर से सचिव आयुष को पत्र जारी कर विश्वविद्यालय में नियम विरूद्ध वित्तीय लाभ प्राप्त करने वाले कर्मचारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई की रिपोर्ट मांगी है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को दी छठ पूजा की शुभकामना

देहरादून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेशवासियों को छठ पूजा की बधाई व शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि छठ पूजा का पर्व सूर्य देवता की उपासना और प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने का महान अवसर है। यह पर्व प्रकृति और मानव के बीच के प्रेम को भी दर्शाता है। सूर्य देवता की आराधना से हम जीवन के हर पहलू में सकारात्मकता और नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि छठ पूजा का महत्व सिर्फ धार्मिक आस्था में नहीं, बल्कि हमारे समाज की संस्कृति, एकता और सौहार्द में भी निहित है। यह पर्व हमें एकजुटता के साथ अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को सही तरीके से निभाने की प्रेरणा देता है। भगवान भास्कर एवं छठी मइया सबकी मनोकामना पूर्ण करें इसकी भी मुख्यमंत्री ने कामना की है।

दून अस्पताल को मिले 27 डॉक्टर, मरीजों को बड़ी राहत

देहरादून। दून मेडिकल कॉलेज अस्पताल को 27 नए डॉक्टर मिल गए है। उनके चयन पर शासन ने अनुमति दे दी है। सात से दस दिन में डॉक्टर ज्वाइन कर लेंगे। डॉक्टरों की तैनाती से मरीजों को बड़ी राहत मिलेगी। अस्पताल में सबसे ज्यादा राहत बर्न यूनिट, कार्डियोलाजी, यूरोलाजी व सर्जरी आदि विभागों में मरीजों को मिलेगी। इन संविदा डॉक्टरों का चयन कालेज में विगत दिनों इंटरव्यू में हुआ था। जिनकी नियुक्ति के लिए अब शासन से अनुमति मिल गई है। अपर निदेशक और एमएस डॉ आरएस बिष्ट ने इसकी पुष्टि की है। बताया कि डॉक्टरों की सूची शासन को भेजी थी।

संयुक्त निदेशकों को अपर निदेशक पद पर मिली पदोन्नति,

देहरादून)। विद्यालयी शिक्षा विभाग के चार संयुक्त निदेशकों को अपर निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत के अनुमोदन के बाद शासन ने पदोन्नति संबंधी आदेश जारी किया। साथ ही सभी अधिकारियों को उनकी नई जिम्मेदारी भी सौंप दी गई है। सचिव शिक्षा रविनाथ रामन के जारी आदेश में गजेंद्र सिंह सोन को पदोन्नत कर उन्हें अपर शिक्षा निदेशक, प्रारभिंक शिक्षा, कुमाऊं मंडल की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसी प्रकार कुलदीप गैरोला को अपर शिक्षा निदेशक, निदेशालय प्रारम्भिक शिक्षा का प्रभार दिया गया है। साथ ही अपर राज्य परियोजना निदेशक समग्र शिक्षा की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी दी गई है।

सम्पादकीय

है नमन पावन धरा को

वन्दे वन्दारूमन्दारं वृन्दावनविनोदिनम् ।
वृन्दावनकलानाथं पुरूषोत्तममद्भुतम।।

कल्पवृक्ष के समान भक्तजनों के मनोरथ पूर्ण करने वाले, वृन्दावन के शोभा के अधिपति, अलौकिक कार्यों द्वारा समस्त लोकों को चकित करने वाले वृन्दावन बिहारी पुरूषोत्तम भगवान को कोटि कोटि प्रणाम करती हूं।

हिमालय के उत्तुंग हिमाच्छादित शिखरों से विभूषित, प्राकृतिक सुषमा से सुसज्जित,पावन गंगा यमुना से अभिसिंचित, नयनाभिराम वन संपदा से परिपूर्ण देवभूमि उत्तराखंड सदैव प्रगतिशील रहे। अपने गरिमामयी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने के लिए तत्पर रहते हुए मातृभूमि को नमन करते हुए इसके सुख शांति और समृद्धि के लिए हम सदैव उद्यमशील रहेंगे। अपना उत्तराखण्ड हर मायने में,हर क्षेत्र में,हर संदर्भ में भारत का सिरमौर बने प्रतिपल यही साधना है, जीवन की यही कामना है।

रोजी –रोजगार की तलाश में महानगरों की ओर बढ़ते पांवों ने पहाड़ के सुंदर सुरम्य गांव को निर्जन कर दिया है। पहाड़ के प्राकृतिक सुषमा संपन्न गांव ,घ्घोस्ट विलेजष के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं,जो अत्यन्त पीड़ादायक है। पहाड़ के गांवों में पुनः रौनक लौटानी है, जीवंतता लानी है। पुरातनता और प्रगतिशीलता के मध्य सामंजस्य से सुख, समृद्धि , समरसता लानी है। त्योहारों की सरसता से हर मन में माधुर्यता सजानी है।हमारे प्रयास अहर्निश जारी रहेंगे।।

जय देवभूमि उत्तराखण्ड!!जय भारत !!

गार्गी मिश्रा

क्षणभंगुर काया व चंचल माया के भ्रम

आज समाज में खुद को 'खुदा' समझने की लालसा इतनी बढ़ती जा रही है कि जरा-जरा सी बात पर भी आदमी के भीतर कुंडली मार कर बैठा हुआ अहंकार का नाग फुंकार उठता है और तब आदमी चिल्ला-चिल्ला कर बोलता है 'तू जानता नहीं, मैं कौन हूं?'

यही आदमी खुद भी नहीं जानता कि वह 'कौन' है? क्षणभंगुर काया और चंचला माया के ऊपर इतराने वाला ही घमंड में चूर हो कर चिल्लाता है 'तू जानता नहीं, मैं कौन हूं?' हर आदमी जानता है कि फक्कड़ मस्त कबीर आदमी की सच्चाई बता गये हैं :-

'पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।
देखत ही छिप जायेगा, ज्यों तारा परभात।

इस शाश्वत सच्चाई को जानते हुए भी जाने किस बात का घमंड हम करते हैं? पूरी 'गीता' का सारतत्व यही तो है कि 'कर्ता' ईश्वर है और हम उसके हाथों में खेलने वाली कठपुतलियां मात्र हैं। आत्म-प्रशंसा की यह बीमारी आजकल इतनी बढ़ गई है कि खुद अपने 'कल' को न जानने वाला भी दूसरों को ध मकाता है कि 'कल तुझे मजा चखाऊंगा।' आदमी के इस आत्म-प्रशंसा वाले लाइलाज रोग के विषय में मुझे हाल ही में एक पौराणिक बोधकथा पढने को मिली, जो मैं अपने विद्वान मित्रों से इसलिए साझी करना चाहता हूं कि वे भी इस रोग से दूर रह सकें :- 'महाराज ययाति अपने छोटे पुत्र का राज्याभिषेक करके कठोर तपस्या के लिए वन चले गए। उन्होंने अपने कठोर तप के बल पर अनेक वरदान प्राप्त किए, जिनमें एक यह भी था कि वे पूरे ब्रह्मांड, ब्रह्मलोक, देवलोक और मृत्युलोक इत्यादि में 'सशरीर' आवागमन कर सकते थे।

तपी ययाति भ्रमण करते हुए जब भी स्वर्गलोक आते थे, उनके पुण्यों के कारण देवराज इंद्र को उन्हें अपने पास सिंहासन पर बैठाना पड़ता था, क्योंकि इंद्र तपी ययाति को अपने से नीचा पद नहीं दे सकते थे। इस बात से देवराज इंद्र बहुत अधिक दुखी थे। वे किसी भी प्रकार से तपस्वी ययाति को स्वर्ग में आने से रोकना और बहिष्कृत करना चाहते थे। स्वर्ग के अन्य देवताओं को भी ययाति का स्वर्ग में आना अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन जब ययाति स्वर्ग आए और इंद्र के साथ उसके सिंहासन पर बैठे, तो इंद्र एवं अन्य देवताओं ने पहले ही तपी ययाति को स्वर्ग से बहिष्कृत करने की योजना बना रखी थी। जैसे ही ययाति सिंहासन पर बैठे, देवराज इंद्र ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करनी शुरू कर दी और उनकी इस प्रशंसा में स्वर्ग के अन्य देवगणों ने भी हां में हां मिलाना शुरू कर दिया। देवराज इंद्र बोले, 'महाराज! मुझे यह जानने की इच्छा है कि आपने ऐसा कौन-सा तप किया है, जिसके कारण आपको सशरीर कहीं भी आने-जाने की शक्ति मिली हुई है?' ययाति अपनी प्रशंसा सुनकर बड़े खुश हुए। वे पूरी तरह इंद्र के जाल में फंस गए और अपने गुणों का बढ़-चढ़ कर बखान करने लगे। बोले, 'मेरे जैसी तपस्या तो किसी ने कभी की ही नहीं है और मेरे जैसा कहीं भी, 'सशरीर' आने-जाने का गुण किसी को भी प्राप्त नहीं हुआ है।'

आत्म-प्रशंसा में बुरी तरह डूबे तपी ययाति बढ़-चढ़ कर अपनी आत्म-प्रशंसा करने लगे और इधर ययाति के सभी गुण उनकी 'आत्म-प्रशंसा' के कारण प्रभाव शून्य होते गए। परिणामतः वे स्वर्ग से बहिष्कृत हो गए।

इस बोधकथा का सार-तत्व यही तो है कि जब हम 'अपने मुंह मियां मि;ू' बनने लगते हैं, तो हमारे वे सभी गुण नष्ट हो जाते हैं, जिनके कारण हमें समाज में मान-सम्मान मिलता है। इसीलिए अंग्रेजी में तो प्रसिद्ध कहावत ही बन गई है कि 'सेल्फ प्रेज इज नो प्रेज' अर्थात खुद की गई प्रशंसा आदमी की प्रशंसा नहीं हुआ करती। संत कबीर तो हमें जीवन का मर्म बताते हुए बड़ी ही आसान शब्दावली कह गये हैं :-

'दोस पराए देखि करि, चला हसंत हसंत।
अपने या न आवई, जिनका आदि न अंत।'

हम अपने दोषों और बुराइयों को तो कभी देखते नहीं, बस दूसरों के दोष ढूंढ़ते रहते हैं। अपनी निन्दा सुनना हमें बहुत नागवार लगता है। सच तो यह है कि प्रशंसा तो वही होती है, जो किसी की अनुपस्थिति में की जाए। आत्म-प्रशंसा तो वास्तव में अभिमान का चरम रूप ही होती है, जिसे सन्तों ने तो जहर ही माना है। हमारे आचार्यों ने तो विद्या प्राप्त कर लेने वाले का सबसे बड़ा गुण ही 'विनम्रता' स्वीकार करते हुए कहा है :- 'विद्या ददाति विनयं, विनयात याति पात्रताम' अर्थात् विद्या मानव को विनय देती है और विनय से आदमी में पात्रता आती है। इस का सीधा-सा अर्थ यही तो निकलता है कि हमें 'आत्म-प्रशंसा' के जहर से बचते हुए विनयी होना चाहिए। लोकजीवन में एक कहावत बड़ी ही प्यारी और मौजू है 'जिसने भी खाया, बेटा बनकर खाया, बाप बनकर कोई नहीं खा सका।'

आइए, इस आत्म-प्रशंसा के जहर से अपने को बचाएं ताकि समाज में शांति और सौहार्द बढ़े। आपकी और मेरी विनम्रता मुस्कान के फूल खिला सकती है।

देश में सुशासन के लिए केंद्र और राज्यों को साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता

हाल में मीडिया में ऐसी कई रिपोर्टें आयीं हैं, जिसमें केंद्र सरकार के विभिन्न स्तरों पर आईएएस अधिकारियों की कमी को पूरा करने के लिए आईएएस सेवा नियमों में संशोधन के भारत सरकार के प्रस्तावित कदम को लेकर कई राज्य सरकारों की गंभीर चिंताओं का जिक्र है। वर्तमान व्यवस्था के तहत, राज्यों से अधिकारी स्वेच्छा से केंद्रीय प्रतिनियुक्ति का विकल्प चुनते हैं। केंद्र इन अधिकारियों में से रिक्त पदों के लिए या निकट भविष्य में रिक्त होने वाले पदों के लिए चयन करता है। ऐसा करते समय केंद्र, अधिकारी के पिछले अनुभव के आधार पर उसकी उपयुक्तता पर विचार करता है। एक बार चयन को अंतिम रूप देने के बाद, राज्य सरकार से संबंधित अधिकारी को कार्यमुक्त करने का अनुरोध करते हुए आदेश जारी किए जाते हैं। प्रत्येक राज्य का एक निश्चित कोटा होता है, जिससे ज्यादा उसके अधिकारियों को केंद्र द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।

पिछले दशक में, केंद्रीय प्रतिनियुक्ति का विकल्प चुनने वाले अधिकारियों की संख्या में क्रमिक गिरावट आई है। 60 के दशक में जहां अवर सचिव स्तर पर भी कई आईएएस अधिकारी होते थे, वहीं वर्तमान में केंद्र सरकार के लिए संयुक्त सचिव स्तर पर भी पर्याप्त संख्या में अधिकारियों का मिलना मुश्किल होता जा रहा है। आमतौर पर, राज्यों की कुल संवर्ग संख्या में से लगभग 25 से 30 प्रतिशत अधिकारी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर हुआ करते थे। वर्तमान में विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों में 10 प्रतिशत से भी कम अधिकारी कार्यरत हैं। कुछ रिपोर्टों के अनुसार उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों में यह संख्या 8 से 15 प्रतिशत के बीच है। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाने के लिए पहले अधिकारियों में एक आकर्षण हुआ करता था। इसे अधिकारी की योग्यता के रूप में देखा जाता था। चयन प्रक्रिया कठिन थी। केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए अधिकारियों की इस अनुपलब्धता का एक कारण करीब डेढ़ दशक पहले के कुछ वर्षों में अधिकारियों की अपर्याप्त भर्ती थी। लेकिन एक महत्वपूर्ण कारण है- राज्यों के पास तुलनात्मक रूप से बेहतर सेवा शर्तें हैं। हालांकि नियमों में किसी भी बदलाव के पहले यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि केंद्र और राज्यों में अधिकारियों की कमी में संतुलन रहे। यदि राज्य में अधिकारियों की कमी है, तो केंद्र को इसे स्वीकार करना चाहिए और वर्ष की शुरुआत में राज्य के साथ एक उचित व्यवस्था करनी चाहिए। राज्यों पर भी इसी तरह की जिम्मेदारी है।

नियमों में प्रस्तावित बदलावों को उपरोक्त आधार पर स्पष्ट रूप से गलत नहीं ठहराया जा सकता। इसका उद्देश्य एक किस्म की विसंगति को दूर करना है। राज्यों की संवर्ग संख्या निर्धारित करते समय उच्च स्तर के कर्तव्य वाले लगभग 40 प्रतिशत पद केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए रखे जाते हैं। इसलिए केन्द्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक निश्चित संख्या में पदों को रखे जाने के बारे में राज्यों के लिए नियुक्ति और स्वीकृत पदों की प्रक्रिया से संबंधित एक अंतर्निहित प्रावधान है। अतीत में हुई अपर्याप्त भर्तियों को देखते हुए नियमों में प्रस्तावित बदलाव केंद्र और राज्यों के बीच इस कमी को समान रूप से साझा करने का प्रावधान करता है। चूंकि रिक्तियों को समय पर भरे जाने की जरूरत होती है, इसलिए समय-सीमा से जुड़ा एक सुझाव भी है जिसके भीतर राज्यों को जवाब देना चाहिए और प्रतिनियुक्ति के लिए चयनित अधिकारी को कार्यमुक्त करना चाहिए।

हालांकि, राज्यों की भी कई चिंताएं हैं जिन पर ध्यान देने की जरूरत है। यह स्पष्ट रूप से समझना होगा कि राज्यों के साथ चर्चा के दौरान जब वे उन अधिकारियों की सूची देते हैं जिन्हें वे केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए भेजना चाहते हैं, तो यह विशुद्ध रूप से राज्यों का प्रस्ताव होगा। यह प्रस्ताव राज्य की अपनी जरूरतों को ध्यान में रखकर होगा और फिर अतीत में हुई भर्ती में कमी को समान रूप से साझा करते हुए केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए नामों की पेशकश की जायेगी। केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति के लिए भेजे जाने वाले अधिकारियों की सूची तैयार करने में केन्द्र की कोई भूमिका नहीं होगी।

केन्द्र अगर किसी अधिकारी को चाहता है, तो वह राज्य को इस आशय सुझाव देगा। यदि दोनों सहमत होते हैं, तो उक्त अधिकारी को केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति पर रखा जाएगा। यदि राज्य प्रतिनियुक्ति के लिए उस अधिकारी के नाम का सुझाव नहीं देना चाहता है, तो संवर्ग नियमों के तहत इस संबंध में शक्ति होने के बावजूद केन्द्र राज्य के विचारों का सम्मान करेगा। अतीत के अनुभवों से यह पता चलता है कि केन्द्र द्वारा अपनी शक्तियों का ऐसा प्रयोग प्रतिकूल साबित होता है। संवर्ग प्रबंधन के संदर्भ में इसके नतीजे अच्छे नहीं होते हैं।

केंद्र सरकार को यह समझना होगा कि संवर्ग प्रबंधन की उत्कृष्ट सफलता सुनिश्चित करने हेतु उप सचिव और निदेशक स्तर के अधिकारियों के लिए कार्य परिस्थितियों को बेहतर करना अत्यंत आवश्यक है। यदि बड़ी संख्या में अधिकारी अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं और केंद्रीय प्रतिनियुक्ति का विकल्प चुनते हैं, तो राज्यों पर संबंधित नामों की पेशकश करने का दबाव होगा। वहीं, दूसरी ओर यदि केवल कुछ ही अधिकारी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति का विकल्प चुनते हैं, तो राज्य सरकार संबंधित अधिकारियों को दिल्ली जाने का विकल्प चुनने के लिए विवश करेगी। इस स्तर के कई अधिकारियों को दिल्ली में अपने बच्चों की शिक्षा, आवागमन और काफी महंगे जीवनयापन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन मुद्दों को अवश्य ही सुलझाना होगा। दिल्ली में प्रतिनियुक्ति की अवधि के दौरान प्रतिनियुक्ति भत्ता देना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। विशेष स्कूलों जैसे कि संस्कृति और अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में दाखिला सुनिश्चित करके उन्हें अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा का भरोसा दिलाया जा सकता है। ये प्रतिष्ठित संस्थान इस मुद्दे पर डीओपीटी के साथ उचित समझौता कर सकते हैं।

राज्यों को भी इस मुद्दे पर विरोधात्मक या प्रतिकूल नजरिए से नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच के साथ गौर करना होगा, जिसके तहत केंद्र और राज्य दोनों की ही जरूरतों में उचित सामंजस्य बैठाना और पूरा करना है। प्रस्तावित संशोधन के तहत केवल संबंधित अधिकारियों की कमी को पूरा करने और जहां आवश्यक हो इसे साझा करने की एक व्यवस्था सुझाई गई है। इसके साथ ही केंद्र सरकार को चाहिए कि वह केंद्रीय सत्ता के दुरुपयोग को लेकर राज्यों की आशंकाओं को दूर करे।

आने वाले वर्षों में केंद्र में डीएस और निदेशक के स्तर पर उच्च अधिकारियों की कमी होगी। अतः केंद्र सरकार को सार्वजनिक क्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारियों के जरिए इनमें से कुछ कमी को पूरा करने पर विचार करना चाहिए।

फिचर्स/विविध

टहलना भी दौड़ने जितना ही है लाभकर

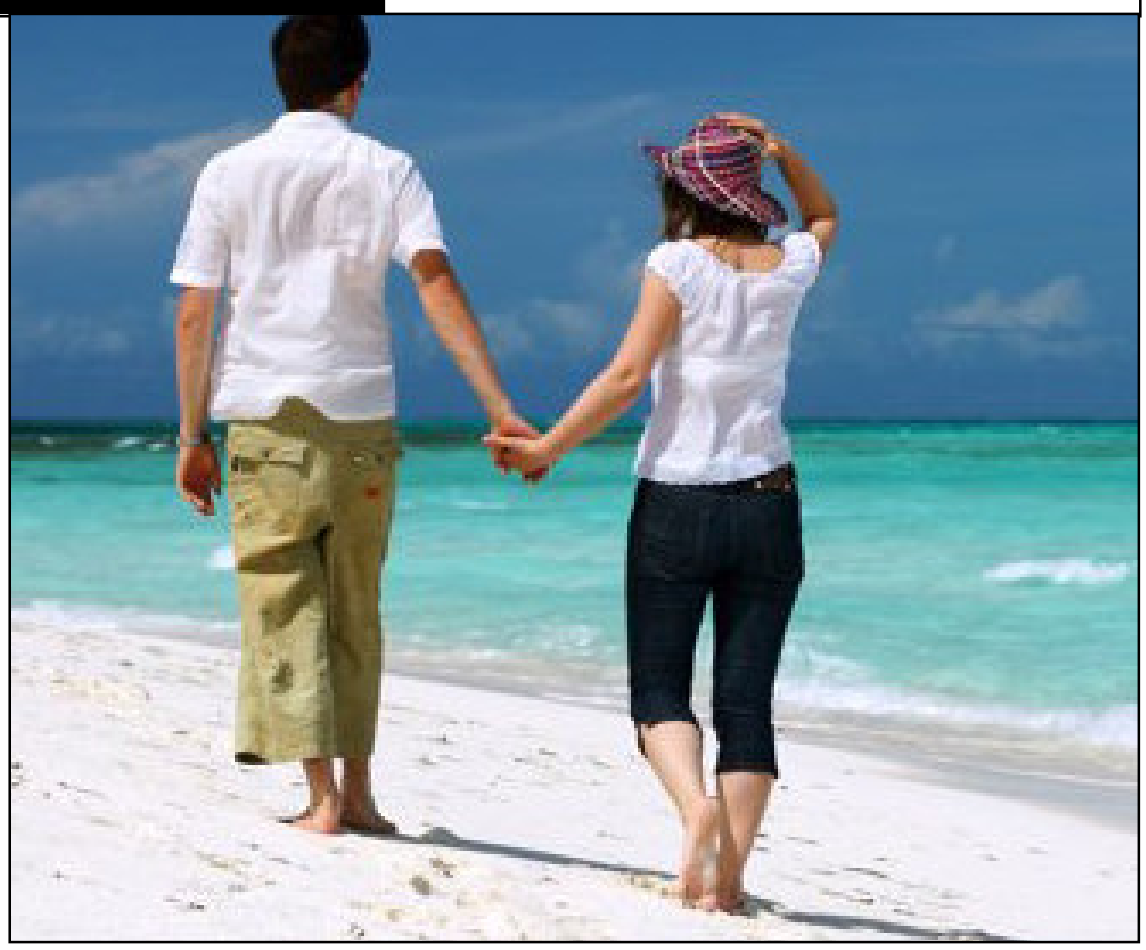

एक नए अध्ययन में पाया गया है कि औसत रफ्तार से टहलना उच्च रक्त चाप, कोलेस्ट्रॉल और मधुमेह के खतरों को कम करने में उतना ही कारगर है, जितना कि तेज रफ्तार दौड़ना। अमेरिकन हर्ट एसोसिएशन की पत्रिका च्आर्टरियोस्क्लेरोसिस, थ्रोम्बोसिस एंड वैस्कुलर बायोलॉजीच में प्रकाशित इस अध्ययन के निष्कर्ष नेशनल रनर्स हेल्थ स्टडी के 33,060 धावकों और नेशनल वाकर्स हेल्थ स्टडी के 15,045 टहलने वालों पर किए गए विश्लेषण पर आधारित है। एक रिपोर्ट के अनुसार, छह वर्षों तक किए गए इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने पाया है कि औसत दर्जे की रफ्तार से टहलने और तेज रफ्तार दौड़ने में यदि समान ऊर्जा खर्च होती है तो ये दोनों गतिविधियां उच्च रक्त चाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह, और दिल की बीमारी के खतरे कम करने में समान रूप से कारगर हैं। अध्ययन के मुख्य लेखक पॉल टी. विलियम्स ने कहा है कि टहलने और दौड़ने से एक जैसे स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं, क्योंकि दोनों गतिविधियों में एक ही समूह की मांस पेशियों का उपयोग होता है और विभिन्न गति के साथ एक ही गतिविधि संपन्न होती है। बर्कले में जीव विज्ञान विभाग की लॉरेंस बर्कले नेशनल लैबोरेटरी में सेवारत वैज्ञानिक, विलियम्स ने कहा है कि धावक जितना दौड़ते हैं और टहलने वाले जितना टहलते हैं, उन्हें उतना ही स्वास्थ्य लाभ मिलता है। यदि दोनों समूहों द्वारा इन दोनों गतिविधियों में समान मात्रा में ऊर्जा खर्च की जाती है, तो मिलने वाला स्वास्थ्य लाभ भी एक समान होता है।

डर से पड़ता है दिल की सेहत पर असर

एक नए अध्ययन में कहा गया है कि भयभीत कर देने वाली किसी घटना को लेकर मस्तिष्क जो प्रतिक्रिया देता है उसका असर दिल पर पड़ सकता है। ब्रिटेन स्थित ब्राइटन एंड ससेक्स मेडिकल स्कूल के अनुसंधानकर्ताओं ने दिल की धड़कनों के चक्र और भय की आशंका के बीच संबंध का पता लगाया है।

स्वस्थ स्वयंसेवकों पर किए गए परीक्षणों में पाया गया कि जब उनके हृदय में संकुचन होता है और रक्त का पूरे शरीर में प्रवाह होता है उस समय उनके द्वारा भय की अनुभूति को महसूस करने की संभावना अधिक होती है। लेकिन यह संभावना उस समय बेहद कम होती है जब हार्टबीट पूरी तरह 'रिलैक्स' या शिथिल होती है। द इंडिपेन्डेन्ट की खबर में कहा गया है कि परिणाम बताते हैं कि भयभीत कर देने वाली किसी घटना को लेकर मस्तिष्क जो प्रतिक्रिया देता है उसका असर दिल पर पड़ सकता है और यह सब कुछ संकुचन और शिथिलता के नियमित चक्र पर निर्भर करता है। इस अध्ययन को लंदन में होने जा रहे 'ब्रिटिश न्यूरोसाइंस एसोसिएशन फेस्टीवल' में पेश किया जाएगा।

गायिका बनीं अभिनेत्री माधुरी दीक्षित

अभिनेत्री माधुरी दीक्षित और उनकी मां फिल्मकार अनुभव सिन्हा के अनुरोध पर उनकी फिल्म 'गुलाब गैंग' के लिए एक गाना गाने के लिए तैयार हो गई। उनके मुताबिक यह फिल्म बेहद अच्छी बनी है।अनुभव ने कहा कि जब हमने माधुरी के सामने फिल्म में एक गाना गाने का प्रस्ताव रखा वह खुशी से तैयार हो गईं। जब वह रिकॉर्डिंग के लिए आईं, वह अपनी मां के साथ आईं और हमने पाया कि उनकी मां भी अच्छी गायिका हैं। इसलिए हमने उनकी मां से भी गाना गाने का अनुरोध किया। अंतत: हमारी फिल्म में माधुरी और उनकी मां ने गाना गाया।वह गाने की रिकॉर्डिंग से खुश हैं। अनुभव ने कहा कि मैं यह अवश्य कहूंगा कि गाना बेहद अच्छा बना है। इसका वीडियो भी देखने में अच्छा लग रहा है। हमने 26 मार्च को इसकी आखिरी शूटिंग पूरी की है। हमारी इसे अगस्त या सितम्बर में प्रदर्शित करने की योजना है।

माना जा रहा है कि यह फिल्म समाजिक कार्यकर्ता सम्पत पाल की संस्था 'गुलाबी गैंग' पर आधारित है जो महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है। सौमिक सेन निर्देशित 'गुलाब गैंग' में अभिनेत्री हुमा कुरैशी और जूही चावला भी महत्वपूर्ण भूमिका में हैं।

दर्शकों को 'आशिकी' से जोड़ना चाहता हूं : मोहित

संगीत प्रधान फिल्म 'आशिकी 2' का निर्देशन करने वाले निर्देशक मोहित सूरी खुद को उन दर्शकों के प्रति और अधिक जिम्मेदार मानते हैं जिन्होंने 1991 की फिल्म 'आशिकी' नहीं देखी है।मोहित ने कहा कि मैं 'आशिकी 2' बनाने के दौरान उन लोगों के प्रति और अधिक जिम्मेदार महसूस कर रहा हूं जिन्होंने 'आशिकी' नहीं देखी है। लोग जो 21 और 22 साल के हैं या फिर मेरी बहन आलिया की उम्र के हैं जो उस वक्त पैदा नहीं हुए थे। मैं इन लोगों को फिल्म से जोड़ने के लिए और अधिक जिम्मेदार महसूस कर रहा हूं।

मोहित का कहना है कि जिन्होंने 'आशिकी' देखी है वे 'आशिकी 2' की आलोचना करेंगे और कहेंगे की पहली फिल्म अच्छी थी। वह उन लोगों को 'आशिकी' के संगीत से जोड़ना चाहते हैं।

'आशिकी' फिल्म का निर्देशन महेश भट्ट ने किया था जिसमें अनु अग्रवाल और राहुल राय मुख्य भूमिका में थे। इस नई फिल्म में कुणाल राय कपूर और श्रद्धा कपूर हैं। यह पुरानी फिल्म का अगला संस्करण नहीं है लेकिन दोनों में एक समानता इनका संगीत प्रधान एवं प्रेम कहानी पर आधारित होना है। फिल्म का प्रदर्शन 26 अप्रैल को होगा।

च्यूइंगम चबाने से बढ़ सकता है आपका वजन

च्यूइंगम चबाने से लोग मोटे हो सकते हैं, क्योंकि इसका मिंटयुक्त स्वाद मीठे खाद्य पदार्थों को और स्वादिष्ट बना देता है और मन करता है, बस खाए जाओ, खाए जाओ। जरूरत से ज्यादा खाना भी मोटापे की वजह है। एक ताजा अध्ययन में यह बात सामने आई है। इंग्लैंड के समाचार पत्र च्डेली मेलच की रपट के अनुसार वैज्ञानिकों ने इस अध्ययन के दौरान पाया कि जिन लोगों को च्यूइंगम चबाने के लिए दिया गया, उन्होंने उच्च कैलोरी युक्त मीठे खाद्य पदार्थों का सेवन ज्यादा किया। इस अध्ययन के सह लेखक एवं ओहियो विश्वविद्यालय में पोषण में शोधछात्र क्रिस्टाइन स्वोबोडा ने वेबसाइट लाइवसाइंस डॉट काम को दिए साक्षात्कार में कहा, इसके पीछे वही रासायनिक प्रतिक्रिया काम करती है जिसके कारण ब्रश करने के बाद आपको संतरे के जूस का स्वाद खराब लगने लगता है। उन्होंने कहा, हमारी रुचि यह पता लगाने में भी है कि क्या यह वजन कम करने में भी सहायक हो सकता है।

आहार आदतों में परिवर्तन जीन को कर सकता है प्रभावित

आहार आदतों में परिवर्तन आपके जीन को प्रभावित कर सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आहार संबंधी परिवर्तन जीन के स्वरूप में बदलाव से जुड़ा होता है जो कि संपूर्ण स्वास्थ्य और शरीर विज्ञान को प्रभावित कर सकता है। स्वास्थ्य को लेकर जागरूक अधिकतर लोग भी समय-समय पर जंक फूड के मोहपाश से मुक्त नहीं हो पाते हैं। मैसाच्युसेट्स यूनिवर्सिटी की मेडिकल इकाई (यूएमएमएस) के जुड़े वैज्ञानिकों के मुताबिक, किसी खास मौके पर ही गया बहुत थोड़ा सा भी चित्ताकर्षक भोजन जीन के में परिवर्तन ला सकता है। यूएमएमएस में मॉलीक्युलर मेडिसिन के प्रोफेसर और शोध सामग्री के प्रकाशक मरियन वल्हाउट शोधपत्र में बताते हैं कि कैसे

शोध से लिया स्वरूप ए ज

उपापचय प्रक्रिया (मेटाबोलिज्म) और शरीर विज्ञान (फिजियोलॉजी) आहार (डाइट) से जुड़े होते हैं। वल्हाउट और उनके सहयोगियों ने इस बात का अवलोकन किया कि कैसे अलग-अलग आहार जीन के स्वरूप में परिवर्तन लाते हैं।

विकास योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता : भरत सिंह चौधरी

अल्मोड़ा। उत्तराखंड सरकार के कैबिनेट मंत्री भरत सिंह चौधरी ने मंगलवार को विकास भवन सभागार में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने जनपद में विकास योजनाओं की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए अधिकारियों को योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक समयबद्ध ढंग से पहुंचाने के निर्देश दिए। बैठक से पूर्व उन्होंने ग्राम्य विकास विभाग एवं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और उनके उत्पादों को व्यापक बाजार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। मुख्य विकास अधिकारी रामजी शरण शर्मा ने जनपद में संचालित विकास योजनाओं, आजीविका संवर्धन, स्वरोजगार तथा अन्य जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की प्रगति की जानकारी दी। समीक्षा बैठक में कैबिनेट मंत्री ने कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें ताकि योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन हो सके। उन्होंने

ग्राम स्तर तक योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करने तथा स्थानीय संसाधनों के माध्यम से रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने जनपद में बांस आधारित परियोजना को पायलट परियोजना के रूप में विकसित करने का सुझाव देते हुए कहा कि इससे खेतों की सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीणों की आजीविका को बढ़ावा मिल सकता है। साथ ही पर्यटन और होमस्टे योजनाओं को रोजगार का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए लाभार्थियों को आतिथ्य संबंधी प्रशिक्षण देने पर भी बल दिया। कैबिनेट मंत्री ने अधिकारियों की कार्यशैली की सराहना करते हुए जनहित में इसी प्रकार कार्य करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी अंशुल सिंह ने आश्वस्त किया कि मंत्री द्वारा दिए गए निर्देशों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा।

आग से दो कच्चे मकान जले, सिलेंडर फटने से ग्रामीण घायल

रुद्रपुर। खानपुर पूर्व क्षेत्र के ग्राम शिवपुरी में मंगलवार सुबह हुए भीषण अग्निकांड में दो कच्चे मकान पूरी तरह जल गए। आग की चपेट में आने से घर में रखा गैस सिलेंडर तेज धमाके के साथ फट गया। सिलेंडर के टुकड़े लगने से एक ग्रामीण घायल हो गया। घटना के समय दोनों परिवारों के सदस्य काम पर गए हुए थे। आग से नकदी और जेवरात समेत घरेलू सामान जलकर राख हो गया। जानकारी के अनुसार, ग्राम शिवपुरी निवासी श्रुति शिकारी पत्नी मिथुन शिकारी और दर्शन दास पुत्र सुनील दास के मकान एक-दूसरे से सटे हुए हैं। मंगलवार सुबह अचानक श्रुति शिकारी के घर में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और पड़ोस में दर्शन दास के मकान को भी अपनी चपेट में ले लिया। ग्रामीणों ने आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन तेज लपटों के कारण सफलता नहीं मिल सकी। इसी दौरान घर में रखा गैस सिलेंडर जोरदार धमाके के साथ फट गया। सिलेंडर के लोहे के टुकड़े दूर तक जा गिरे, जिनकी चपेट में आकर एक ग्रामीण घायल हो गया। सूचना मिलने पर दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि, तब तक दोनों मकानों में रखा अधिकांश सामान जलकर नष्ट हो चुका था। अग्निकांड में श्रुति शिकारी के घर में रखी करीब 50 हजार की नकदी, सोने-चांदी के जेवरात और अन्य घरेलू सामान जलकर राख हो गया। वहीं, दर्शन दास के घर में रखी 20 हजार की नकदी, करीब एक लाख रुपये मूल्य के जेवरात और अन्य कीमती सामान भी आग की भेंट चढ़ गया। अग्निशमन अधिकारी महेश चंद्रा ने बताया कि पीड़ित परिवारों ने लाखों रुपये के नुकसान की बात कही है। घटना की जानकारी मिलते ही समाजसेवी संजय ठुकराल और क्षेत्र पंचायत सदस्य कमलेश मिस्त्री मौके पर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवारों को ढांढस बंधाते हुए फौरी राहत के रूप में आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई और हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने प्रशासन से प्रभावित परिवारों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की मांग की है।

नई टिहरी की जाम नालियां बढ़ा रही मानसून में जलभराव का खतरा

नई टिहर। मानसून से निपटने के लिए नगर पालिका नई टिहरी की तैयारियां फिलहाल कागजों तक ही सिमट कर रह गई है। एक ओर नगर क्षेत्र में करोड़ों की धनराशि खर्च कर इन दिनों नगर पालिका सड़कों का डामरीकरण करवा रही है वहीं दूसरी ओर सड़कों के किनारे बनी नालियां कूड़े-कचरे और मलबे से अटी पड़ी हैं। कई स्थानों पर नालियां पूरी तरह बंद हैं। ऐसी स्थिति में मानसून की पहली बारिश का पानी सड़क किनारे स्थित घरों व दुकानों में घुसने का खतरा बना हुआ है।नगर पालिका इन दिनों करीब साढ़े आठ करोड़ रुपये की लागत से नगर क्षेत्र की 18 किलोमीटर सड़कों का डामरीकरण करा रही है लेकिन बारिश के पानी की निकासी के लिए नालियों की सफाई और मरम्मत पर ध्यान नहीं दे रही है। नगर क्षेत्र के मोलधार, आंचल डेयरी, जेल रोड, ऑल सेंट कॉन्वेंट स्कूल और जिला अस्पताल बौराड़ी के आसपास कई स्थानों पर नालियां लंबे समय से बंद पड़ी हैं। नालियों में जमा कूड़ा-कचरा और मलबा पानी की निकासी में बाधा बना हुआ है।स्थानीय लोगों का कहना है कि बरसात के दौरान नालियां ओवरफ्लो होने का खतरा बना रहता है। यदि समय रहते नालियों की सफाई नहीं हुई तो बारिश का पानी सड़कों पर बहने के साथ ही आसपास के मकानों और दुकानों के अंदर घुस सकता है। लोग नगर पालिका से नालियों की सफाई और मरम्मत की मांग करते आ रहे हैं लेकिन समस्या जस की तस बनी है। मानसून से पहले यदि नालियों की सफाई नहीं हुई तो सड़कों पर इन दिनों जो डामर बिछाया जा रहा है वह मलबे से उखड़ सकता है। सड़कें फिर से क्षतिग्रस्त हो सकती है।नगर क्षेत्र में नालियों की मरम्मत और उनमें जमा मलबा हटाने का कार्य किया जा रहा है। मानसून अवधि में तीन माह के लिए श्रमिकों की संख्या बढ़ाने और नालियों की सफाई के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

प्रदेश के संसाधनों के दोहन और बढ़ते नशे पर बरसे पीसी तिवारी, वैकल्पिक राजनीति को मजबूत करने का आह्वान

बागेश्वर। उत्तराखंड परिवर्तन पार्टी (उपपा) के केंद्रीय समन्वयक पीसी तिवारी ने गरुड़ में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति को लेकर भाजपा और कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि दोनों राष्ट्रीय दलों ने बारी-बारी से सत्ता संभालते हुए राज्य के संसाधनों का दोहन किया, लेकिन आम जनता की अपेक्षाओं और राज्य आंदोलन के मूल उद्देश्यों को पूरा करने में विफल रहे।

पीसी तिवारी ने कहा कि उत्तराखंड राज्य गठन के पीछे जो सपने और आकांक्षाएं थीं, वे आज भी अधूरी हैं। उन्होंने कहा कि वर्षों बाद भी पहाड़ों से पलायन नहीं रुका है और स्थानीय लोगों को अपने ही संसाधनों पर अपेक्षित अधिकार नहीं मिल सका है। उन्होंने प्रसिद्ध उक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि "पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी, पहाड़ के काम नहीं आ पाई है", जो आज भी प्रदेश की वास्तविक स्थिति को दर्शाती है।

उपपा नेता ने आरोप लगाया कि सरकारें प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और स्थानीय हितों की रक्षा करने के बजाय खनन तथा शराब व्यवसाय को बढ़ावा देने में अधिक रुचि दिखा रही हैं। उन्होंने कहा कि इससे न केवल पर्यावरणीय संतुलन प्रभावित हो रहा है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए तिवारी ने कहा कि जिस समाज का युवा वर्ग दिग्भ्रमित हो जाए, उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि युवाओं को रोजगार, शिक्षा और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के बजाय उन्हें गलत दिशा में धकेला जा रहा है, जो प्रदेश के लिए गंभीर चिंता का विषय है।उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वर्तमान समय में पूंजीपतियों का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, जबकि आम जनता की समस्याएं और

चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि निकाय चुनावों से लेकर विधानसभा और लोकसभा चुनावों तक धनबल और शराब के बढ़ते प्रभाव ने लोकतंत्र की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं।पत्रकार वार्ता के अंत में पीसी तिवारी ने प्रदेश की जनता से जागरूक होकर वैकल्पिक राजनीति को मजबूत करने तथा जनहित के मुद्दों को केंद्र में रखकर लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने का आह्वान किया।

कुंभ की तैयारियों को लेकर संत समाज से संवाद कर लिए सुझाव

हरिद्वार। आगामी हरिद्वार कुंभ मेला 2027 को सुव्यवस्थित स्वरूप देने के लिए राज्य सरकार द्वारा की जा रही तैयारियों से संत समाज को अवगत कराया गया। इस दौरान मेला प्रशासन और संतों के बीच विस्तृत संवाद हुआ तथा विभिन्न व्यवस्थाओं पर सुझाव भी लिए गए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार कुंभ तैयारियों को लेकर अखाड़ों एवं संत समाज के साथ लगातार संवाद बनाए हुए है, ताकि सभी व्यवस्थाएं उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप सुनिश्चित की जा सकें। इसी

क्रम में अपर मेलाधिकारी दयानंद सरस्वती सहित मेला प्रशासन के अधिकारियों ने विभिन्न प्रमुख अखाड़ों एवं संत-महात्माओं से भेंट कर कुंभ मेला 2027 की तैयारियों की विस्तृत जानकारी साझा की। अधिकारियों ने श्री महानिर्वाणी अखाड़ा के श्रीमहंत रवींद्र पुरी, श्री पंचायती अखाड़ा निरंजनी के श्रीमहंत डॉ. रवींद्र पुरी, महामंडलेश्वर ललितानंद गिरी, स्वामी हरिचेतनानंद, जूना अखाड़ा के महंत महेश गिरी और योगगुरु स्वामी परमानंद महाराज सहित अनेक संतों से मुलाकात कर कुंभ क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की प्रगति से अवगत कराया। बैठक के दौरान अधिकारियों ने बताया कि कुंभ क्षेत्र में स्थायी आधारभूत ढांचे का तेजी से विकास किया जा रहा है, जिसमें सड़क, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, स्वच्छता व्यवस्था, पार्किंग और अन्य आवश्यक सुविधाएं शामिल हैं। इसके साथ ही अस्थायी शिविरों और श्रद्धालुओं की सुविधाओं की रूपरेखा पर भी विस्तार से चर्चा की गई। संतों ने सुझाव देते हुए कहा कि सभी व्यवस्थाएं श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और सुगमता को प्राथमिकता देते हुए और अधिक प्रभावी ढंग से विकसित की जाएं। उन्होंने कहा कि कुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक समरसता का विराट प्रतीक है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 43/1, वृंदायन, आनंदलोक कॉलोनी (हुंडई शोरूम के पीछे)रामपुर रोड,देवल्चौर खाम, हल्द्वानी, जिला नैनीताल (उत्तराखंड) पिन 263139 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328
सह सम्पादक
रमेश चन्द्र द्विवेदी

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।